



श्री निकुञ्ज प्रवेश

‘हे करुण्यधाम मैया ! वृन्दावनेश्वरी ! आपका हृदय परम कोमल है । मेरा रोम-रोम अपने दिलदूलह प्यारे पार्थिविचन्द्र के नित्य विहार की भूमिका दर्शन करने के लिये उत्कण्ठा से तड़फ रहा है । श्रीस्वामिनी के चरणकमल ही हमारे सर्वस्व हैं, उन्हें हृदय से लगाने के लिये मैं छटपटा रही हूँ । अब थक गयी हूँ, शरीर शिथिल हो गया है । अपनी स्वामिनी की मधुर स्मृति में तड़फ-तड़फ जब मेरा जीवन समाप्त हो जाय तब आप कृपा करके मुझे अपनी गोद में बैठाकर श्रीपार्थिविचन्द्र के पाद पद्मों में पहुँचा देना । मुझ निर्बल बच्ची का भार आपको ही उठाना पड़ेगा । मुझे केवल आपका ही सहारा है ।

हे सर्वेश्वरी जननी ! जब ललित लड़ैती मिथिला राजकुमारी निजस्वामिनी की दर्शनलालसा से मतवाली होकर पागलों की भाँति ब्रज की वनवीथियों में, कुंज-कुंज में, झुक-झुककर झाँकती हुई मैं आपके निभृत निकुंज में पहुँज जाऊँ तो मेरी दीन दशा देखकर, आप करुणा से द्रवित होकर मेरी अंगुली पकड़कर, मेरी प्यार अम्बा श्रीविदेहनन्दिनी की जन्मभूमि की मंजुल वृक्षावली में पहुँचा देना । वहाँ लताओं के झुरमुट में बैठकर मैं उनकी रूपमाधुरी का पान करती रहूँगी और पंचमस्वर में जी जान से जीजी जानकी की जै जै मनाती रहूँगी ।

हे श्रीवृन्दावननाथ पट्टमहिषी ! जब मैं श्रीपार्थिविचन्द्र के प्रेमप्रवाह में बहती हुई आपकी वृन्दावन भूमि में अचेत होकर गिर पड़ूं तो आप अपनी सहज वात्सल्यपूर्ण कृपादृष्टि से मुझे उठाकर, हमारी अपनी स्वामिनी के चरण चिन्हों से अंकित कोमल स्निग्ध शीतल सुरभित रजकणों से सुशोभित महल के आंगन में पहुँचा देना । उनका स्पर्श प्राप्त करके मैं सचेत और कृतकृत्य हो जाऊँगी । श्रीभक्तकोकिलजी ऐसे ही भाव से पूर्ण सिन्धीभाषा के अनेक पदों से कूँजते रहते थे ।

संवत् २००४ का श्रावण पुरुषोत्तम मास था । शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि शनिवार था । सन्ध्या के समय सर्वदा की भाँति सत्संग विलास होता रहा, भगवान् श्रीरामचन्द्र के वनवास का करुण प्रसंग चल रहा था, श्रीमहाराज गंगा पार होने के लिये नौकापर सवार हुए और श्रीस्वामीजी ने कथा समाप्त की । वैसे उनका स्वभाव था कि शयन का प्रसंग आनेपर जागने की कथा कहकर समाप्त करते थे । नौकाहरण होनेपर पार पहुँचाकर कथा रखते थे परन्तु आज नौका चलाने का प्रसंग कहकर कथा पूरी कर दी । उस दिन रात्रि को नित्य नियम से भी अधिक सत्संग एवं हास विलास होता रहा ।

तृतीया के प्रातःकाल तीन बजे ही जगे । पाँच बजे तक प्रियाप्रियतम के ध्यान और गुणगान में मग्न रहे बाद में शौच आदि क्रिया से निवृत्त होने के पश्चात् श्रीस्वामीजी ने मैया से कहा—
“आज हमारी तैयारी है ।” ऐसा कहकर श्रीवृन्दावनेश्वार

श्रीराधारानी के सम्मुख बैठकर और उनके चरणों में दृष्टि लगाकर अत्यन्त गम्भीर स्वर से 'श्रीराधा अम्मा ! श्रीराधा अम्मा !!' यह मधुर नाम जपने लगे । मैया का चित्त घबड़ा गया उसने कातर होकर पूछा-‘शरीर तो ठीक है न?’ स्वामीजी ने कहा-‘सब ठीक है ।’ मैया ने प्रार्थना की कि नीचे से कुछ लोगों को बुला लें ? श्रीस्वामीजी ने कहा-‘तुम बैठी रहो, बहुतों के आने से हल्ला गुल्ला होगा ।’ मैया ने मुझे बुलाने के लिये पूछा । स्वामीजी ने कहा-‘उन्हें कष्ट देने की ज़रूरत नहीं है ।’ वे फिर गद्गद् कण्ठ से नामजप करने लगे । मैया से न रहा गया उसने मेरे पास पूरन को भेज दिया और श्रीस्वामीजी के कुशल के लिये ईश्वर से प्रार्थना करने लगी । सत्संगी लोग वैद्य को लेकर ऊपर आये । स्वामीजी को किसी से बातचीत करना अच्छा नहीं लगता था । मुट्ठी बाँधकर सबको चुप रहने का संकेत किया । वैद्यजी ने नाड़ी देखी, वे आश्चर्यचकित होकर बोले-‘नाड़ी तो है ही नहीं ? नामोच्चारण कैसे हो रहा है ? ऐसा तो मैंने कभी नहीं देखा है ?’ यह सुनकर सब व्याकुल हो गये । हितमूर्ति मैया ने साहस करके घर के सब रुपये और वस्तुएँ लाकर सामने रख दीं । विनय करने पर स्वामीजी ने उत्साह से जल लेकर ईश्वरार्पण किया । ऐसा करने पर भी नामोच्चारण होता रहा । ध्यान अपने लक्ष्य में ही रहा । शरीर में कोई भी अमांगलिक चिन्ह नहीं आया । बिना हिचकी और बिना रुकावट के नाम जपका स्वर और भी मधुर होता गया । मुखारविन्द पर दिव्य तेज

छाया हुआ था मानों प्रियतम के मिलन की खुशी मुखारविन्द से छलकी पड़ती हो । ऐसा मालूम पड़ता था कि स्वामीजी किसी ऊँचे सुखस्थान पर बैठकर यह सब कुछ कर रहे हैं और उन्हें बाहर का ध्यान नहीं है । उनका गम्भीर स्वर ऐसा जान पड़ता था मानों कहीं दूर से आ रहा हो । नाम जप करते-करते अचल ध्यान के सिंहासन पर बैठे-ही-बैठे वे प्रियतम की नित्यलीला में प्रविष्ट हुए । अपने प्रियतम इष्टदेव का नाम छिपाने का जो उनका निष्काम प्रेमपण था अन्त में भी उन्होंने उसका निर्वाह किया ।

जिस समय पूरन मेरे पास पहुँचा मैं स्नान कर रहा था । मैं झटपट श्रीमहाराजजी से वहाँ आने के लिये कहकर गया । थोड़ी देर में श्रीमहाराजजी पहुँचे उन्होंने सबको आश्वासन दिया-‘घबड़ाओ मत साईं साहब तो ध्यान मग्न हैं ।’

वास्तव में श्रीभक्तकोकिलजी अब भी ध्यान मग्न हैं । भक्त भगवान् का एक प्यारा-प्यारा सुन्दर सलौना खिलौना है । वे ही उसको बनाते हैं । चाहे जैसे उनके साथ खेलते हैं । उसको अपनी छाती से लगा लेते हैं । अपने से एक कर लेते हैं-और फिर कभी अलग नहीं करते ।